2.6. इंडो-ग्रीक या बैक्ट्रियन ग्रीक *[The Indo-Greeks (Bactrian Greeks)]*

मौर्योत्तर युग में भारत पर विदेशी आक्रमणकारियो में प्रथम यूनानी, यवन, इंडो-ग्रीक, हिंद-यूनानी या बैक्ट्रियन ग्रीक थे। मध्य एशिया की तत्कालीन राजनीति से बाध्य होकर उन्हें भारत-विजय की योजना बनानी पड़ी। सिकंदर की मृत्यु के पश्चात उसके सेनापति सेल्यूकस ने मध्य एशिया के एक बड़े भू-भाग पर अपना आधिपत्य जमाकर एक साम्राज्य कायम किया। इसी के अंतर्गत बैक्ट्रिया (उत्तरी अफगानिस्तान) और पार्थिया (ईरान) भी थे। बैक्ट्रिया की सामरिक एवं आर्थिक स्थिति ने इसे महत्त्वपूर्ण बना दिया। इसकी सीमा पूर्व में हिंदूकुश और पामीर पर्वत श्रेणियों, दक्षिण में पैरोपेनिसडाई और आरकोशिया, पश्चिम में पार्थिया और कैस्पियन सागर तथा उत्तर में जैक्जाटौज, सर और ऑक्स नदियों से सुरक्षित थी। यूरोप और एशिया के मध्य व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने से इस राज्य का आर्थिक महत्त्व भी था, अतः इसपर अधिकार करने के लिए यवन सेनापति एवं पदाधिकारी हमेशा लालायित रहते थे। सेल्यूकस के अक्षम उत्तराधिकारियों के समय में उसका साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। बैक्ट्रिया और पार्थिया साम्राज्य से अलग हो गए। 250 ई० पू० में बैक्ट्रिया के गवर्नर डियोडोट्स प्रथम ने एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जो इंडो-ग्रीक या इंडो-बैक्ट्रियन राज्य के नाम से जाना जाता है। उस समय अंटियोकस द्वितीय सीरिया का राजा था और डियोडोट्स प्रथम उसका गवर्नर। इस वंश के शासक मध्य एशिया में अपनी शक्ति का प्रसार करते रहे। डियोडोट्स द्वितीय, यूथीडेमस आदि शासकों ने यवनों की शक्ति का मध्य एशिया में विस्तार किया। यूथीडेमस एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसने संभवतः डियोडोट्स द्वितीय की हत्या कर गद्दी पर अधिकार कर लिया। सीरिया के नए शासक अंटियोकस तृतीय ने बैक्ट्रिया में यूथीडेमस की सत्ता स्वीकार कर ली। उसने अपनी पुत्री का विवाह भी यूथीडेमस के पुत्र दमित्र से कर दी। यूथीडेमस ने आरकोशिया, सीस्तान और पौरोपेनिसडाई पर भी अधिकार कर लिया। इधर अंटियोकस तृतीय ने हिंदूकुश पार कर भारत पर आक्रमण किया, परंतु सुभागसेन के प्रतिरोध के कारण वह आगे नहीं बढ़ सका। सुभागसेन से मैत्री कर वह वापस लौट गया। इसी समय सीथियनों ने मध्य एशिया में अपने पाँव फैलाने आरंभ किए। चीनी शासक शी-हुआंग-शी द्वारा चीन की विशाल दीवार के निर्माण ने सीथियनों का चीन की तरफ बढ़ने का मार्ग रोक दिया। फलतः, वे बैक्ट्रिया

और पार्थिया पर दबाव डालने लगे। अतः, यवनों को भारत की तरफ बढ़ने को बाध्य होना पड़ा। भारत की तत्कालीन राजनीति भी यवन-आक्रमण के उपयुक्त थी। उनके सामने महान यूनानी विजेता सिकंदर का आदर्श भी था। यवन भारत से धन भी प्राप्त करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने भारत-विजय की योजना बनाई।

इंडो-ग्रीकों का राजनीतिक इतिहास
(Political History of the Indo-Greeks)

डेमेट्रियस प्रथम (189-171 ई० पू०)—भारत पर पहला महत्त्वपूर्ण यवन आक्रमणकारी यूथीडेमस का पुत्र डेमेट्रियस प्रथम या दमित्र था। वह एक महत्त्वाकांक्षी शासक था। बैक्ट्रिया में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के पश्चात उसने भारत विजय की योजना बनाई। बैक्ट्रिया का राज्य अपने पुत्र को सुपुर्द कर वह अपने दो सेनापतियों, अपोलोडोट्स और मिणाण्डर के साथ भारत की तरफ बढ़ा। अपोलोडोट्स के साथ वह सिंधु की तरफ से आगे बढ़ा और इसपर उसने अधिकार किया। माध्यमिका (चित्तौड़ का निकटवर्ती क्षेत्र) भी उसके नियंत्रण में आ गई। मिणाण्डर के नेतृत्व में यवनों ने पंजाब पर विजय प्राप्त की और आगे बढ़ते हुए वे मथुरा, पांचाल, साकेत तथा मगध की राजधानी पाटलिपुत्र तक पहुँच गए। डेमेट्रियस ने अपनी राजधानी साकल (स्यालकोट, पाकिस्तान) में बनाई। उसने भारतीय राजाओं के समान उपाधि धारण की तथा अपने नाम के सिक्के चलाए, जिनपर यूनानी और खरोष्ठी लिपियों का व्यवहार किया गया। **गार्गीसंहिता, महाभाष्य** और स्ट्रैबो के विवरणों से यवन-आक्रमण की पुष्टि होती है। यवनों के भारतीय प्रसार को शुंग शासक पुष्यमित्र ने रोका। फलतः, यवनों को बाध्य होकर सिंधु नदी तक वापस आना पड़ा। यद्यपि शुंगों ने यवनों को भारत में आगे बढ़ने से रोक दिया, तथापि उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रांत के कुछ क्षेत्र यवनों के नियंत्रण में ही बने रहे। डेमेट्रियस की पहचान कुछ विद्वानों ने **महाभारत** में उल्लिखित दत्तमित्र से की है। अफगानिस्तान और भारत में उसके और उसके पिता के नाम पर अनेक नगरों का नामकरण हुआ। इनमें से कुछ प्रमुख नगर हैं ड्रेमेट्रियस पोलिस (आरकोशिया), दत्तमित्री (सौवीर) तथा यूथीडेमिया (शाकल)। इन नगरों में यूनानियों को बसा कर वहाँ यूनानी सत्ता मजबूत की गई।

जिस समय डेमेट्रियस भारत-विजय में व्यस्त था, उसी समय बैक्ट्रिया में यूक्रेटाइड्स के नेतृत्व में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। जस्टिन के अनुसार दमित्र 60,000 सैनिकों के साथ यूक्रेटाइड्स का सामना करने को आगे बढ़ा, परंतु उसे सफलता नहीं मिली। बैक्ट्रिया पर डेमेट्रियस पुनः अधिकार नहीं कर सका और वह राज्य उसके हाथों से जाता रहा। उसे पश्चिमी पंजाब और सिंध से ही संतुष्ट होना पड़ा। इस समय से भारतीय यूनानी राज्य दो भागों में विभक्त हो गया। डेमेट्रियस की राजधानी साकल बनी रही, परंतु यूक्रेटाइड्स ने गांधार पर विजय प्राप्त कर तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाई। यूक्रेटाइड्स का राज्य पश्चिमी पंजाब से बैक्ट्रिया तक फैल गया; क्योंकि उसके सिक्के बैक्ट्रिया, सीस्तान, काबुलघाटी, कपिशा और गांधार से प्राप्त हुए हैं।

डेमेट्रियस के पश्चात भारत में यवनों की दो शाखाओं के राज्य का उल्लेख मिलता है। पहला वंश यूथिडेमस और डेमेट्रियस का था तथा दूसरा यूक्रेटाइड्स का। इन दोनों वंशों के अनेक शासकों का उल्लेख मिलता है, परंतु उनका तिथिक्रम निश्चित नहीं है और विवाद का विषय है। इन शासकों की जानकारी का मुख्य स्रोत उनके द्वारा जारी किए गए सिक्के हैं।

1. यूथिडेमस वंश—एपोलोडोट्स—वह संभवतः डेमेट्रियस का छोट भाई था। डेमेट्रियस के साथ एपोलोडोट्स भी भारतीय अभियान पर आया था। मिणाण्डर के साथ भी उसके नाम का उल्लेख हुआ है। एपोलोडोट्स द्वारा शासित क्षेत्र की स्पष्ट जानकारी नहीं है। **पेरीप्लस** के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि उसका राज्य गांधार, पंजाब और सिंध क्षेत्र में था। **पेरीप्लस** यह भी कहता है कि एपोलोडोट्स के सिक्के मिणाण्डर के सिक्कों के साथ बेरीगाजा (भड़ौच) के बाजारों में चलते थे, लेकिन इन विवरणों पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। एपोलोडोट्स का अधिकार संभवत पंजाब के कुछ भागों और पश्चिमोत्तर सीमा तक ही सीमित रहा होगा।

मिणाण्डर (मिलिन्द)—यूथीडेमस के वंशजों में, बल्कि समस्त हिंद-यूनानी शासकों में सबसे महान राजा मिणाण्डर ही था। यूनानी इतिहासकार उसकी प्रशंसा करते हैं। डेमेट्रियस के सेनापति के रूप में वह उसके साथ भारत आया था। उसी ने मथुरा, पांचाल, साकेत और पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया था तथा सोन नदी तक बढ़ गया था, परंतु पुष्यमित्र शुंग द्वारा परास्त होकर उसे वापस लौटना पड़ा था। डेमेट्रियस के पश्चात यूक्रेटाइड्स द्वारा बैक्ट्रिया पर अधिकार करने और उसके बाद के राजनीतिक घटनाक्रम ने मिणाण्डर को सत्ता प्राप्त करने का सुनहला मौका दिया। उसने करीब 160-120 ई॰ पू॰ अथवा 175-145 ई॰ पू॰ के मध्य शासन किया।

महायान बौद्ध ग्रंथ **मिलिन्दपण्हो** में मिलिन्द या मिणाण्डर के जीवन और उसके कार्यकलापों का वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में मिलिन्द और बौद्ध आचार्य नागसेन के बीच हुए प्रश्नों के आधार पर मिलिन्द की बौद्ध धर्म में अभिरुचि तथा तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। लामा तारानाथ की पुस्तक **भारत में बौद्धधर्म का इतिहास** तथा क्षेमेंद्र की पुस्तक **अवदानकल्पलता** (11वीं शताब्दी) में भी इस यवन शासक का उल्लेख है। मिलिन्द के सिक्के काबुल से मथुरा और बुंदेलखंड तक पाए गए हैं। इलाहाबाद के निकट रेह नामक स्थान से उसका एक अभिलेख भी मिला है। इन सभी स्रोतों से मिलिन्द के कार्यकलापों पर प्रकाश पड़ता है।

मिलिन्दपण्हो के अनुसार मिणाण्डर जन्म अलसन्दा (अलेक्जेंड्रिया) से 200 योजन की दूरी पर स्थित कलसी नामक ग्राम में हुआ था। इस आधार पर टार्न ने यह अनुमान लगाया है कि मिणाण्डर यूथीडेमस के राजवंश से संबंधित नहीं था; क्योंकि यूनानी रानियाँ गाँवों में नहीं रहती थीं। टार्न का यह मत सर्वमान्य नहीं है। कुछ विद्वानों का मानना है कि वैवाहिक संबंधों द्वारा मिणाण्डर यूथीडेमस वंश से संबद्ध था। मिणाण्डर को यूथीडेमस वंश का ही माना जाता है। उसकी राजधानी साकल या स्यालकोट थी।

शासक बनने के बाद मिणाण्डर ने अपना राज्य विस्तार किया। स्ट्रैबो के अनुसार उसने सिकंदर से भी अधिक विजय प्राप्त की। **पेरीप्लस** के अनुसार मिणाण्डर का शासन संभवतः भड़ौच तक था जहाँ उसके सिक्के चलते थे, लेकिन इसकी पुष्टि के लिए प्रमाण नहीं हैं। मिणाण्डर का राज्य बहुत बड़ा था। इसके अधीन काबुलघाटी, भारत की पश्चिमोत्तर सीमा, पंजाब, सिंध, राजपूताना और आधुनिक उत्तरप्रदेश के कुछ भाग सम्मिलित थे।

मिलिन्द (मिणाण्डर) एक विजेता के रूप में ही विख्यात नहीं है, बल्कि बौद्धधर्म में गहरी अनुरक्ति के कारण भी उसकी प्रशंसा की जाती है। संभवतः वह पहला हिंद-यूनानी शासक था जिसने बौद्धधर्म में गहरी अभिरुचि ली तथा एक बौद्ध बन गया। **मिलिन्दपण्हो** के अनुसार यह यवन शासक अशोक के समान बौद्ध बन गया। प्लुटार्क उसकी न्यायप्रियता की प्रशंसा करता है। उसकी मृत्यु के पश्चात बुद्ध के समान उसके अवशेष उसके राज्य के नगरों में वितरित किए गए एवं उन पर स्तूपों का निर्माण हुआ। मिणाण्डर की सभा में 500 सदस्यों (योनकों) का उल्लेख किया गया है। इन विवरणों से मिणाण्डर की बौद्ध धर्म के प्रति गहरी अभिरुचि परिलक्षित होती है। टार्न महोदय का मानना है कि मिलिन्द ने बौद्ध संघ में प्रवेश नहीं किया, राज्य का त्याग भी नहीं किया। उसने बौद्ध धर्म के प्रति अपना लगाव इसलिए पैदा किया; क्योंकि उसकी प्रजा की एक बड़ी संख्या इस धर्म को मानती थी और उनका समर्थन और सहयोग यवनराज के लिए आवश्यक था। मिणाण्डर द्वारा बौद्ध धर्म अपनाए जाने के जो भी कारण रहे हों, लेकिन उसके बौद्ध होने में संदेह करने की गुंजाइश नहीं है। **मिलिन्दपण्हो** के विवरण के अतिरिक्त उसके सिक्कों पर जो धर्मचक्र, हाथी के चित्र तथा 'धमिकस' शब्द मिलते हैं उनसे मिणाण्डर का बौद्ध धर्म के प्रति अनुराग प्रकट होता है। मिणाण्डर एक महान दार्शनिक भी था। यह **मिलिन्दपण्हो** ग्रंथ से स्पष्ट हो जाता है। मिणाण्डर के समय में उसकी राजधानी स्यालकोट धर्म, कला और व्यापार का केंद्र बन गई। नागसेन इस नगर की प्रशंसा करता है। यह नगर भव्य भवनों से सुसज्जित था। यहाँ दूर-दूर के व्यापारी अपना सामान बेंचने आते थे। इस प्रकार मिलिन्द एक महान शासक था जिसने राज्य की स्थापना और विस्तार के अतिरिक्त सांस्कृतिक विकास को भी प्रश्रय दिया। रैप्सन के शब्दों में कुरु शासक

जनमेजय और विदेह के राजा जनक के समान मिणाण्डर (मिलिन्द) की महत्ता उसके दार्शनिक होने के कारण है न कि एक विजेता के कारण।[1]

स्ट्रैटो प्रथम और द्वितीय—145 ई० के लगभग मिणाण्डर का उत्तराधिकारी स्ट्रैटो प्रथम बना। वह अल्पायु में ही शासक बना। उसकी माता एगाथोक्लिया उसके संरक्षक के रूप में शासिका बनी रही। स्ट्रैटो ने लंबे समय तक शासन किया। वह करीब 90 ई० पू० तक शासक बना रहा। पूर्ण शासक बनने पर उसने 'सोटर' (Soter) की उपाधि धारण की। मिणाण्डर की मृत्यु के बाद यूथीडेमस वंश की सत्ता कमजोर पड़ गई। स्ट्रैटो को यूक्रेटाइड्स वंश की प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पड़ा। हेलिओक्लीज और एंटियलकिड्स ने स्ट्रैटो के राज्य के एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। संभवतः हेलियोक्लीज ने स्ट्रैटो प्रथम को पराजित कर पैरोपेनिसडाई से झेलम नदी तक के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इस क्षेत्र से हेलियोक्लीज के सिक्के बड़ी संख्या में मिले हैं। स्ट्रैटो का अधिकार सिर्फ झेलम और यमुना नदी के मध्यवर्ती इलाके पर रह गया। शकों ने भी स्ट्रैटो को परेशान किया।

स्ट्रैटो प्रथम का उत्तराधिकारी स्ट्रैटो द्वितीय था। वह लगभग 90 ई० पू० में शासक बना। उसके समय में यूथीडेमस वंश की सत्ता और अधिक सिमट गई। मथुरा के मित्र शासकों, औदुम्बरों, कुणिन्दों एवं अर्जुनायनों ने, जिनके सिक्के इस क्षेत्र से मिलते हैं, मथुरा से रावी नदी तक के बीच के प्रदेश पर अधिकार कर यूनानी सत्ता समाप्त कर दी। फलस्वरूप यूनानी सत्ता रावी और झेलम नदियों के बीच सिमट कर रह गई। इस क्षेत्र से अनेक यूनानी राजाओं के सिक्के मिलते हैं। लगभग 30 ई० पू० में शकों ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर यूथीडेमस वंश के शासन को इस क्षेत्र से भी उखाड़ फेंका।

2. यूक्रेटाइड्स वंश—यूक्रेटाइड्स—इस वंश की सत्ता का संस्थापक यूक्रेटाइड्स ही था। इतिहासकार स्ट्रैबो और जस्टिन के विवरणों से इस शासक के विजय में जानकारी मिलती है। वह सीरिया के शासक एंटिओकस चतुर्थ का चचेरा भाई था। जिस समय डेमेट्रियस भारत में यूनानी सत्ता का विकास कर रहा था उसी समय यूक्रेटाइड्स ने बैक्ट्रिया का राज्य हड़प लिया। डेमेट्रियस ने यूक्रेटाइड्स से संघर्ष किया, लेकिन वह पराजित हुआ। करीब 171 ई० पू० में यूक्रेटाइड्स के हाथों में बैक्ट्रिया की सत्ता आई। यूक्रेटाइड्स एक वीर योद्धा था। उसने सोग्डियाना (बुखारा) से भी युद्ध किया। यह युद्ध संभवतः इस कारण हुआ क्योंकि सोग्डियाना दमित्र का समर्थक था और यूक्रेटाइड्स की सत्ता स्वीकारने को तैयार नहीं था। आपसी संघर्षों ने यूक्रेटाइड्स की सत्ता कमजोर कर दी। इसका लाभ उठाकर पार्थिया के शासक मिथ्रिदेट्स ने बैक्ट्रिया के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया। यूक्रेटाइड्स ने दमित्र के उत्तराधिकारियों से संघर्ष कर भारत में भी अपनी सत्ता का विस्तार किया। उसने संभवतः कपिशा और पूर्वी गांधार पर अधिकार किया। इस क्षेत्र से उसके सिक्के भी मिले हैं। इतिहासकार जस्टिन का मानना है कि यूक्रेटाइड्स ने भारत पर विजय प्राप्त की।

हेलिओक्लीज—लगभग 159-158 ई० पू० में यूक्रेटाइड्स के पुत्र हेलिओक्लीज ने अपने पिता की हत्या कर सत्ता हथिया ली। जस्टिन के विवरण के अनुसार हेलिओक्लीज अपने पिता के साथ संयुक्त शासक था। उसने अपने पिता को अपने रथ के पहियों के नीचे कुचल कर मार डाला। टार्न इस पितृहंता की पहचान दमित्र प्रथम के पुत्र दमित्र द्वितीय से करते हैं, परंतु अधिकांश विद्वानों का मानना है कि यूक्रेटाइड्स का हत्यारा उसका पुत्र हेलिओक्लीज ही था। प्राप्त सिक्कों के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि यूथीडेमस वंश के शासकों पर आरंभिक सफलता प्राप्त करने के बाद उसे पार्थियनों और शकों से संघर्ष करना पड़ा। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप बैक्ट्रिया उसके हाथों से जाता रहा। अतः हेलिओक्लीज ने काबुल घाटी और भारत में अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। इस क्षेत्र में उसे डेमेट्रियस के उत्तराधिकारियों से संघर्ष करना पड़ा। उसने संभवतः पैरोपेनिसडाई से झेलम तक के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इस क्षेत्र से हेलिओक्लीज के सिक्के मिलते हैं।

एंटिअलकिडस—यूक्रेटाइड्स के वंश का अंतिम महत्त्वपूर्ण शासक एंटिअलकिडस था। वह संभवतः 125 या 112 ई॰ पू॰ में शासक बना। उसके समय का एक अभिलेख बेसनगर (विदिशा) से मिला है। अभिलेख एक गरुड़स्तंभ पर खुदा हुआ है। इसके अनुसार तक्षशिला निवासी हेलिओडोरस, जिसे महाराज एंटिअलकिडस ने अपने राजदूत के रूप में भारतीय राजा काशीपुत्र भागभद्र के दरबार में भेजा था, ने भागवत वासुदेव के सम्मान में गरुड़स्तंभ की स्थापना करवाई; भागभद्र की पहचान शुंग शासक भागवत से की गई है। इस अभिलेख से ऐसा विदित होता है कि एंटिअलकिडस ने यूथीडेमस वंश के शासकों के विरुद्ध शुंगों से मैत्री स्थापित की। शुंगों की ब्राह्मण धर्म के प्रति अनुरक्ति को तुष्ट कर उनसे सहायता के लिए ही गरुड़ध्वज की स्थापना करवाई गई, किंतु इसका पर्याप्त लाभ उसे नहीं मिल सका होगा; क्योंकि शुंगों की सत्ता स्वयं ही कमजोर हो चली थी। एंटिअलकिडस अपना प्रभाव पश्चिमी एवं पूर्वी गांधार पर बनाए रखने में सफल रहा। उस समय इस क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण नगर कपिशा, पुष्कलावती और तक्षशिला पर उसका नियंत्रण बना रहा।

लिसियस—एंटिअलकिडस का समकालीन राजा लिसियस था। उसकी कुछ मुद्राओं पर उसके नाम के साथ एंटिअलकिडस का भी नाम और चित्र मिलता है। कुछ विद्वान उसे यूथीडेमस वंश का मानते हैं परंतु रैप्सन के अनुसार वह यूक्रेटाइडस के वंश का ही था। संभवतः शकों से सुरक्षा के दृष्टिकोण से दोनों ने आपस में मैत्री कर ली अथवा दोनों सह-शासक के रूप में गांधार के विभिन्न भागों पर राज्य करते थे। डी॰ सी॰ सरकार का मानना है कि एंटिअलकिडस, लिसियस और हेलियोक्लीज एक ही साथ क्रमशः तक्षशिला, कपिशा और पुष्कलावती पर शासन करते थे।

हर्मियस—यूक्रेटाइडस वंश का अंतिम शासक संभवतः हर्मियस था। उसकी सत्ता ऊपरी काबुल घाटी तक सिमट कर रह गई थी। उसका छोटा राज्य चारों ओर से शत्रु राज्यों से घिरा हुआ था। पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र पर शक-पार्थियन और कुषाणों का दबाव बढ़ता जा रहा था। अपनी सुरक्षा के लिए उसने यूथीडेमस वंश के हिप्पोस्ट्रेटस की पुत्री कैलिपो से विवाह भी किया, परंतु इसका कोई लाभ उसे नहीं मिल सका। प्रत्येक आक्रांता अपनी सीमा एवं राज्य का विस्तार करना चाहता था। यूक्रेटाइडस वंश की सत्ता समाप्तप्रायः थी। कुषाण नेता कुजुलकदफिसस ने पहले तो हर्मियस की अधीनता स्वीकार कर ली, परंतु बाद में उसके राज्य पर अधिकार कर लिया।[1]।

2.7. भारतीय संस्कृति एवं समाज पर हेलेनिस्टिक सभ्यता का प्रभाव *(Influence of the Hellenistic Civilization on Indian Culture and Society)*

यूनानी सभ्यता 'हेलेनिक' सभ्यता के नाम से भी जानी जाती है। इसका कारण यह है कि यूनानी अपने देश को 'हेलास' (Hellas) और अपने-आपको 'हेलेनिज' (Hellenes) कहते थे। अतः, उनकी सभ्यता हेलेनिक सभ्यता' (Hellenic Civilization) कहलाई। इस सभ्यता से भिन्न 'हेलेनिस्टिक सभ्यता' (Hellenistic Civilization) का भी विकास हुआ। सिकंदर के विजय-अभियान ने यूनान में एक नए युग का सूत्रपात किया। उसके समय में यूनानी साम्राज्य एशिया माइनर, सीरिया, मिस्र, बेबीलोन इत्यादि जगहों में फैल गया। इन जगहों में यूनानी बस गए तथा उन्होंने वहाँ यूनानी संस्कृति का प्रसार किया। इस संस्कृति में मूल यूनानी तत्त्वों के अतिरिक्त स्थानीय तत्त्वों का समावेश कर एक भिन्न संस्कृति की स्थापना हुई, जो हेलेनिस्टिक सभ्यता के नाम से जानी जाती है। यूनानियों के साम्रज्य विस्तार के साथ इस नई संस्कृति (हेलेनिज्म) का भी प्रसार हुआ। भारत पर यूनानी आक्रमण के फलस्वरूप इस संस्कृति के कुछ तत्त्व भारत भी आए।

हेलेनिस्टिक सभ्यता ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को प्रभावित किया या नहीं, यह एक विवादास्पद प्रश्न है। अनेक इतिहासकार, जैसे—स्मिथ, टॉर्न इत्यादि भारत पर यूनानी प्रभाव

1. कुछ विद्वानों का मानना है कि पार्थियन या पह्लव शासक गोंडोफर्निज ने इस वंश की सत्ता समाप्त की।

को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके मतानुसार इंडो-ग्रीक आक्रमणकारी भारत के कुछ हिस्सों पर थोड़े समय के लिए ही अपना आधिपत्य जमाए रख सके। अतः, उनके भारत-आक्रमण का कोई भी स्थायी राजनीतिक या सांस्कृतिक प्रभाव नहीं पड़ा। इन विद्वानों की यह भी मान्यता है कि भारतीय इन यवन-आक्रमणकारियों से विजेता के रूप में अवश्य प्रभावित एवं भयभीत हुए, परंतु उन्हें भारतीयों ने न तो 'संस्कृति का दूत' ही समझा और न ही उनकी संस्कृति को अनुकरणीय माना। इन विद्वानों के अनुसार, इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि "यवन-शासकों के सिक्कों पर जहाँ एक ओर ग्रीक-कथाएँ अंकित हैं वहाँ दूसरी ओर बढ़ती हुई संख्या में भारतीय कथाओं की संख्या यह प्रदर्शित करती है कि यूनानी भाषा भारत के लोगों की समझ में नहीं आती थी।" अनेक आधुनिक विद्वानों ने इन विद्वानों के मतों की आलोचना करते हुए उन्हें एकांगी बताया है। वस्तुतः, जे० एन० बनर्जी, वुडकॉक जैसे अनेक विद्वान भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर हेलेनिस्टिक सभ्यता के प्रभाव को स्वीकार करते हैं। बनर्जी महोदय तो 'द्वितीय यूनानी आक्रमण' को सिकंदर के आक्रमण से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानते हैं।[1] वस्तुतः, भारत और बैक्ट्रिया के संपर्क ने दोनों की सभ्यता एवं संस्कृति को प्रभावित किया। हेलेनिस्टिक सभ्यता ने भारतीय समाज, धर्म और कला को प्रभावित किया।

हिंद-यवन (इंडो-ग्रीक) धीरे-धीरे भारतीय समाज में समाविष्ट हो गए। उन्हें 'सर्वज्ञ यवन' कहकर सम्मानित किया गया। यवन चिकित्सकों एवं इंजीनियरों की भारत में पर्याप्त प्रतिष्ठा थी। व्यूह-रचना के विशेषज्ञ तथा युद्ध-मशीनों के निर्माता के रूप में उनको सम्मान से देखा जाता था। **वृहतकथामंजरी** में यवनों को दक्ष शिल्पी माना गया है। उड़ाकू यंत्रचालित घोड़ों के निर्माता के रूप में भी उनका उल्लेख हुआ। यवनों ने यूनानी आधार पर भारत में अनेक नगर भी बसाए। भारतीयों ने इनसे अनेक बातें सीखीं। यूनानी ज्ञान से भारतीय सबसे अधिक ज्योतिष के क्षेत्र में लाभान्वित हुए। सप्ताह का सात दिनों में विभाजन, कैलेंडर का ज्ञान, ग्रहों का नामकरण यूनान के आधार पर ही किया गया। ग्रहों की गतिविधियों के आधार पर भविष्यवाणी करने की प्रथा भी यूनानी फलित ज्योतिष से प्रभावित थी। भारतीयों ने स्पष्ट रूप में ज्योतिष के क्षेत्र में यूनानियों के प्रभाव को स्वीकार किया है। **गार्गीसंहिता** और **बृहत्संहिता** में यह बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई है कि यद्यपि यवन बर्बर और म्लेच्छ हैं, तथापि ज्योतिष के अपने ज्ञान के कारण वे प्राचीन ऋषियों की भाँति श्रद्धा के पात्र हैं। वाराहमिहिर की **पंचसिद्धांतिका** में ज्योतिष के जिन सिद्धांतों का वर्णन है ('रोमक', 'पौलस' और 'सूर्यसिद्धांत') उन पर यूनानी प्रभाव लक्षित होता है। पौलस सिद्धांत के आधार पर भारतीय त्रिकोणमिति (ग्रीक त्रिगोनोमेत्री) का विकास हुआ। अनेक ज्योतिषपरक यूनानी शब्दों का संस्कृत में प्रयोग आरंभ हुआ। भारतीय ज्योतिष के राशिचक्र के संस्कृत नाम ग्रीक मूल या अनूदित है, जैसे क्रिय (क्रियोस, मेष), तावुरि (तौरस, वृषभ), लेय (लियो, सिंह) इत्यादि।

इंडो-ग्रीक संपर्क ने भारतीय मुद्रा-प्रणाली को महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित किया। उनके आगमन के पूर्व भारत में आहत सिक्के चलते थे, जिनपर राजा का चित्र या अभिलेख नहीं होता था। यूनानियों ने भारत-आगमन के साथ ही वैसे सिक्के खुदवाए, जिनपर राजा की आकृति खुदी रहती थी। यूनानियों ने ही सबसे पहले सोने के सिक्के चलाए। उसके पहले चाँदी और ताँबे के सिक्के चलते थे। यूनानी सिक्कों से प्रभावित होकर अन्य भारतीय शासकों ने भी आकृति और अभिलेखयुक्त सिक्के चलाए तथा सोने के सिक्के भी ढलवाए। कुषाण-शासक कनिष्क ने हिंद-यूनानी और रोमन सिक्कों के आधार पर अपने सिक्के चलाए। चाँदी के सिक्के भी अब पहले की अपेक्षा अधिक अच्छे बनने लगे। सिक्कों के लिए ग्रीक शब्द 'द्रख्म' कालांतर में भारत में 'द्रम्म' और दाम में बदल गया।

हेलेनिस्टिक सभ्यता का प्रभाव भारतीय धर्म पर भी पड़ा। अनेक यूनानी शासकों ने भारतीय धर्म को अपनाकर इसका मध्य एशिया में प्रसार किया। यवनशासक मिणाण्डर ने बौद्धधर्म से

प्रभावित होकर इसे स्वीकार कर लिया। एक यूनानी पदाधिकारी मेरिड्रक थियोडोरस ने इस धर्म से प्रभावित होकर स्वातघाटी तक बौद्धधर्म को पहुँचाया। उसने स्वातघाटी (उदयान) में बौद्धधर्म का प्रसार किया। बुद्ध के अवशेषों की पूजा वहाँ भी आरंभ हुई। एक दूसरे थियोडोरस ने जनकल्याण के लिए एक तालाब खुदवाया। हेलियोडोरस भागवत-धर्म से प्रभावित था। उसने बेसनगर में गरुड़ध्वज की स्थापना की। भारतीय मूर्तिकला भी यूनानी प्रभाव से अछूती नहीं रही। हेलेनिस्टिक कला ने गांधार मूर्तिकला या ग्रीक-बौद्धशैली को भी प्रभावित किया। बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवता अपोलो के मुख से मिलती-जुलती बनाई गईं। इस कला का पूर्ण विकास शक-कुषाण काल में हुआ। मूर्तिकला के अतिरिक्त स्थापत्य कला पर भी यवनों का प्रभाव पड़ा। यवन शैली से प्रभावित कुछ भवनों के अवशेष तक्षशिला में मिले हैं। अनेक विद्वान संस्कृत के सुखांत नाटकों पर यूनानी नाटकों का प्रभाव स्वीकार करते हैं। संस्कृत नाटकों में यवनिका शब्द भी यूनानियों के संपर्क से ही आया। संस्कृत साहित्य में यूनानी सुखांत नाटकों के निकटतम शूद्रक की **मृच्छकटिकम्** है। पाणिनि जिस 'यवनानी लिपि' का उल्लेख करता है वह यूनानी प्रभाव के कारण ही थी। भारत और यूनान में व्यापारिक संपर्क भी बढ़े। यवन संपर्क के कारण भारतीय व्यापार का विकास हुआ। **पेरिप्लस ऑफ दी एरिथ्रीयन सी** का रचयिता एक यूनानी ही था जो भारत का विदेशों के साथ व्यापारिक संबंध प्रमाणित करता है। यवन भी भारतीय सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इस प्रकार, इंडो-ग्रीक-आक्रमण के परिणामस्वरूप भारतीय और यूनानी एक-दूसरे के और निकट आए।